Page:
Date: / /

पाठ-4
सुभान खाँ शब्द अर्थ

1. उल्लास → खुशी
2. जियारत → दर्शन
3. दराज़ → लंबी
4. मजहब → धर्म
5. बद्धी → काले धागे मे बँधा ताबीज
6. जवार-जुर → क्षेत्र-भार
7. रसूल → पैगंबर मोहम्मद साहब
8. सवाब → पुण्य
9. नीम आस्तीन → आधी बाँह का
10. फरमाइश → माँग
11. तसबीह → माला

Date: / /

12. दयानतदारी → सच्चाई

13. मुकर्रर → निश्चित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. लेखक का मुस्लिम समाज से गहरा संबंध होने का क्या कारण था?

उ० लेखक का जन्म काफी देवताओं की मनौती करने के बाद हुआ था, उनके के एक दुसैन मदाक थी थे। लेखक की नानी सुभान खाँ को बहुत इज्जत देती थी। वह बकरीद जैसे पर्व पर सुभान खाँ को अपने हाथ से पुरु खीर और सेवई परोसकर खिलाती थी। इस प्रकार लेखक का बचपन से ही मुस्लिम समाज के साथ गहरा नाता था।

प्रश्न 2. हज ना जा पाने के दादा के दर्द को देखकर बालक उन्हें क्या सलाह देता है और इस पर दादा की प्रतिक्रिया क्या थी?

हज न जा पाने के दादा के दर्द को देखकर बालक उन्हे सलाह देता है कि सुभान दादा के बालक ने

Date: / /

मामा से कुछ कर्ज ले ले और हज कर आए। परन्तु यह बात सुनकर दादा कहते है कि नही बबुआ कर्ज के पैसी पैसे से तीर्थ करने पर सवाब नही मिलता है।

प्र-3 बचपन मे लेखक के मन मे अल्लाह से संबंधित किस प्रकार के सवाल उठते थे?

बचपन मे लेखक के मन मे अल्लाह से संबंधित यह सवाल सवाल उठते कि उनके कि उ दादा का अल्लाह पश्चिम मे ही रहता है। पूरब मे क्यो नही रहता है? और लेखक सोचता था कि अल्लाह गुस्से वाला होता है और अल्लाह के रसूल की दाढ़ी भी सुभान दादा की दाढ़ी जैसी लम्बी होती है या नही।

प्र-4 सुभान के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण परिचय दीजिए।

सुभान खाँ एक राज मिस्त्री थे। व्यक्तिगत रूप से वह एक भले इंसान थे। उनको दो ही चीजे संसार मे सबसे प्यारी थी। एक काम और दूसरी अल्लाह। सुभान खाँ काम करते हुए अल्लाह को नही भूलते थे और अल्लाह से फुर्सत पाकर फिर काम मे जुट जाते थे। वह हिंदु धर्म को भी

Page :
Date: / /

को भी उतना ही सम्मान देते थे जितना अपने मुस्लिम धर्म को देते थे। उनके जवार-भर में उनकी बुजुर्गी की धाक थी। बड़े बड़े झगड़ो का हल निकालने के लिए पंचायत उन्हें पंच बनाती थी वह एक ईमानदार और दयानतदारी व्यक्ति थे।

प्र०-5 मुहर्रम के दिन बचपन मे लेखक क्या करता है।

मुहर्रम के दिन बचपन मे लेखक को अधिकतर ताजिये के चारो और रंगीन छड़ी ~~लेखक~~ लेकर कूदना पड़ता था। वह गले मे गंडे पहनते थे। इस दिन लेखक नए कपडे पहनता था। नए नए चेहरे और तरह तरह के खेल देखता था।

प्र०-6 हज से लौटने के बाद दादा ?

हज से लौटने के बाद दादा का अधिकातर वक्त नमाज - बंदगी मे ही बीतता। दिन भर उनके हाथो मे ~~तसबिह~~ तसबीह के दाने घूमते और उनकी जबान अल्लाह की रट लगाए रहती थी।

"दादा धर्म निरपेक्ष थे, कहानी के संदर्भ से इस बात को सिद्ध कीजिए।

कहानी के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'दादा धर्मनिरपेक्ष थे, क्योंकि वह मुस्लिम होते हुए भी एक हिंदू के परिवार के साथ पूरी आत्मीयता के साथ जुड़े हुए थे। वह लेखक के साथ होली दीवाली और ईद बकरीद सभी त्योहार मनाते थे। सुभान दादा ने लेखक के मामा के लिए एक मंदिर का निर्माण भी किया था। बाद में उन्होंने अपना अरमान पूरा करने के लिए एक मस्जिद का भी निर्माण कराया। इन सब तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि वह 'धर्मनिरपेक्ष थे'।

प्रस्तुत कहानी से क्या संदेश मिलता है?

प्रस्तुत कहानी से हमें यह संदेश मिलता है कि हमें सभी धर्मों का समान रूप से सम्मान करना चाहिए। ईश्वर और अल्लाह एक है। कोई भी धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता। मानवता का धर्म ही सबसे बड़ा धर्म होता है।